" आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में शिक्षकों की आत्मसामर्थ्य एवं नियन्त्रण संस्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन "

रतन बारिक

भूमिका - मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही शिक्षा के विकास एक महत्त्वपूर्ण साधन माना जाता है । इसमें शिक्षक सदैव समाज की नैतिक शक्ति रहा है । वैज्ञानिक विकास , तीव्र सञ्चार माध्यमों एवं भौतिक सम्पन्नता के बदलते आयामों में मानव समाज के प्रयास बुद्धि को प्रभावित किया है । हम तार्किक एवं रणनीतिक महत्त्व की समस्याओं के समाधान हेतु बौद्धिक अथवा अकादमिक बुद्धि का अनुप्रयोग करते हैं , और हमें अपने एवं अन्य की भावनाओं की तथा सुख - दुःखादि अवस्थाओं की अनुभव करने हेतु भावात्मक बुद्धि का सहारा लेना पड़ता है , और अकादमिक बुद्धि एवं भावात्मक बुद्धि को सही क्रम से उपयोग करने के लिए आध्यात्मिक बुद्धि का जरुरत होती है , अर्थात् मानवीय बुद्धि का पुरी तस्वीर तभी बन सकती है , जब आध्यात्मिक बुद्धि के सम्प्रत्यय का भी उसमें समावेश हो , आध्यात्मिक बुद्धि शिक्षकों के सन्तुलित **व्यक्तित्व** निर्माण में गुरुत्व पूर्ण भूमिका निभाती है । कक्षा वातावरण परिप्रेक्ष में शिक्षकों के समुचित अध्यापन कौशल उनके उच्च शैक्षिक बुद्धि को ही दर्शाता है । छात्रों के साथ तथा अन्यान्य शिक्षको के साथ सामञ्जस्य पूर्ण व्यवहार संवेगात्मक बुद्धि का ही परिचायक है । शिक्षकों मे शेक्षिक बुद्धि (I.Q) तथा सांवेगिक बुद्धि का समावेशन तव हो सकती है यदि शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धि (S.Q) का समावेशन सही हो , आध्यात्मिक बुद्धि सम्पन्न शिक्षक ही सन्तुलित व्यक्तित्व सम्पन्न होता है , तथा अध्यापन कार्य में समुत्पन्न समस्याओं का समाधान करके प्रभावात्मक शिक्षण कार्य सम्पन्न करता है ।

डेविड बी . , किंग ने आध्यात्मिक बुद्धि के चार आयाम यथा - (1) समीक्षात्मक अस्तित्वादी सोच (2) व्यक्तिगत अर्थ उत्पादन (3) परस्पर अभिज्ञता (4) चेतन अवस्था में विस्तार प्रस्तुत किये हैं । भारतीय सन्दर्भ में इनमें एक अन्य आयाम (5) समन्वयात्मक दृष्टि की क्षमता को सम्मिलित करके इन पाँचों आयाम के आधार प्रस्ततु अध्ययन में आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन किया गया ।

(1) समीक्षात्मक अस्तित्वादी - जिससे तात्पर्य व्यक्ति के उस चिन्तन परक क्षमता से है जिसके आधार पर व विभिन्न विषयों एवं मुद्दों को समीक्षात्मक रुप में अपने विचार की परिधि में लाता है , उन्हें अर्थ प्रदान करता है एवं अपने अस्तित्व के संदर्भ में उनको स्वयं से जोड़ता है ।

(2) व्यक्तिगत अर्थ उत्पादन इससे तात्पर्य है व्यक्ति का अपने भौतिक एवं मानसिक अनुभव से व्यक्तिगत अर्थ ग्रहण एवं प्रयोजन ढूंढ निकालने की क्षमता ।

(3) परस्पर अभिज्ञता व्यक्ति को अपने स्वयं से , परिवेश एवं अन्य व्यक्तियों से ऊपर उठकर परिस्थिति को समझ सकने की क्षमता ।

(4) चेतन अवस्था में विस्तार - इस अवस्था के अनुसार व्यक्ति चेतना की उच्चतर अवस्थाओं में प्रविष्ट होकर तथा उनसे बाहर आकर अपने चिन्तन में विस्तार लाने की क्षमता प्रदर्शित करता है तथा वह चेतना के एक ही स्तर पर अपने को अनुसीमित नहीं रखता ।

(5) समन्वयात्मक दृष्टि की क्षमता - इस क्षमता के अनुसार व्यक्ति में कई मुद्दों एवं उनसे जुड़ी परिस्थितियों के मध्य समान तत्वों को देखने और पहचानने की क्षमता के साथ उनपर एक सर्वांगिक दृष्टि बनाये रखने की

क्षमता होती है ।

3. आत्मसामर्थ्य की अवधारणा आत्मसामर्थ्य से तात्पर्य एक ऐसे आत्मप्रत्यक्षण से होता है जिसमें व्यक्ति यह अनुमान लगता है कि वह किसी दी हुई परिस्थिति में कितने प्रभावकारी ढंग से कार्य कर सकता है । दूसरे शब्दों में आत्मसामर्थ्य से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा किये गये इस उम्मीद या प्रत्याशा से होता है कि वह अमुक परिस्थिति में कितना प्रभावकारी ढंग से कार्य कर सकता है ।

4. नियंत्रण संस्थिति की अवधारणा कार्य तथा कार्य के परिणामों को आन्तरिक व बाह्य कारकों से जोड़ने की प्रवृत्ति को नियंत्रण संस्थिति कहा जाता है । जब कोई विश्वास करता है उसका जीवन वह स्वयं नियंत्रण कर सकता है , इस प्रवृत्ति को आन्तरिक नियंत्रण संस्थिति कहते हैं और बाह्य परिवेश यथा भाग्य , परिवेश भगवान प्रभृतियों पर विश्वास करते हैं , उसे बाह्य नियंत्रण संस्थिति कहते हैं ।

समस्या कथन एवं प्रयुक्तपदों का परिभाषीकरण

प्रस्तुत शोधकार्य के समस्या कथन का निम्नवत रूप से प्रस्तुत की गई " **आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में शिक्षकों की आत्मसामर्थ्य एवं नियन्त्रण संस्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन** " ।

परिभाषिक शब्दावली → आध्यात्मिक बुद्धि का तात्पर्य समीक्षात्मक - अस्तित्ववादी चिन्तन , व्यक्तिगत अर्थोत्पादन , परस्पराभिज्ञता , चेतनावस्था विस्तार , समन्वयात्मक दृष्टि क्षमताओ से है ।

> शिक्षक सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय में सभी विषयों में सेवारत अध्यापक ।

> आत्म सामर्थ्य - का तात्पर्य किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए स्वप्रत्यक्षीकृत क्षमता से है ।

> नियंत्रण संस्थिति का तात्पर्य कार्य तथा कार्यों के परिणाम या प्रतिफल को आन्तरिक तथा बाह्य कारकों के साथ जोड़ने की प्रवृत्ति से है ।

शोध के उद्देश्य प्रस्तुत शोधकार्य के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निरूपित किये गये हैं

- शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि के विविध आयामों की यथास्थिति का पता लगाना ।
- सरकारी एवं गैर - सरकारी विद्यालयों की आध्यात्मिक बुद्धि का तुलनात्मक विवरण ज्ञात करना ।
- सरकारी एवं गैर - सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की लिंग के आधार आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना ।
- शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना ।
- सरकारी एवं गैर - सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य के मध्य सम्बन्ध निरूपण करना ।

• सरकारी एवं गैर - सरकारी विद्यालयों के लिङ्ग के आधार पर शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य के मध्य सम्बन्ध निरूपण करना ।

- शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना ।
- सरकारी एवं गैर - सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति के मध्य सम्बन्ध निरुपण करना ।

• सरकारी एवं गैर - सरकारी विद्यालयों में लिङ्ग के आधार आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति का सम्बन्ध ज्ञात करना ।

शोध का औचित्य प्रस्तुत अध्ययन आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में विद्याललीय शिक्षकों के आत्मसामर्थ्य एवं नियंत्रण संस्थिति के बारे में सम्बन्धों का संज्ञान प्रदान करता है जो कि उनके व्यक्तित्व निर्माण प्रक्रिया में सहायक होता है । आत्म सामर्थ्य एवं आन्तरिक नियंत्रण संस्थिति जो किसी भी व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण गुण माने जाते हैं को इस अध्ययन के द्वारा शिक्षकों के व्यवहार कोश का अंग बनाने तथा अभिवृद्धि करने हेतु उपाय कौशलों के आधार खोजने में नई दिशा प्राप्त हुआ । अधिकतरसामाजिक सन्दर्भो में शिक्षा तथा अन्य व्यवसायों के अन्तर्गत दूरदृष्टि एवं तथ्यों तथा उनमें निहित तत्त्वों को उजागर करने की दृष्टि से आध्यात्मिक बुद्धि की अहम् भूमिका होती है । पिछले दो दशकों में आध्यात्मिक बुद्धि के विविध आयामों यथा अर्थ निरूपण , सन्दर्भीकरण , सम्भाव्यताओं का आकलन तथा दूरदर्शिता पूर्ण सोच विकसित करने की ओर प्रबल आधार प्राप्त हुए हैं जिसे अध्यापक शिक्षा के

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण रूप से स्वीकार किया गया है । विद्यालय एवं समाज की वर्तमान परिस्थितियों में परिलक्षित नवीन परिवर्तित प्रतिमानों को आध्यात्मिक बुद्धि के माध्यम से एक सुनिश्चित दायरे में लाना होगा जिससे विद्यालय , समाज तथा वैश्विक संदर्भ की चुनौतियों को नये एवं प्रभावी अवबोधात्मक पहल की ओर ले जाना सम्भव है । इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन शिक्षकों के व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों - आत्म सामर्थ्य एवं नियंत्रण संस्थिति को आध्यात्मिक बुद्धि के परिप्रेक्ष्य में विकसित एवं संवर्धित करने की दिशा का निर्धारण तो करता ही साथ ही हमारे प्रयासों को सफल बनाने का मार्ग भी प्रशस्त करता है । इसके परिणामस्वरूप यह स्थानीय राष्ट्रीय एवं वैश्विक शैक्षिक सन्दर्भो को समझने एवं उपजी चुनौतियों का सामना करने हेतु शिक्षकों में सामर्थ्य विकसित करने में सहायक होता है ।

शोध - परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित मुख्य परिकल्पनाओं को निरूपित किया गया है ।

मुख्य शोध परिकल्पना - 1 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्मसामर्थ्य एवं नियंत्रण संस्थिति में परस्पर निर्भरता पाई जाती है ।

मुख्य परिकल्पना - 2 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्मसामर्थ्य तथा नियंत्रण संस्थिति में परस्पर सम्बन्ध , संस्थाओं के संरचना स्वरूप (सरकारी व गैर सरकारी) तथा लिङ्ग से प्रभावित होती है ।

इन मुख्य शोध परिकल्पनाओं के परीक्षा हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनायें निरूपित की गई है

N.H. - 1 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य में परस्पर निर्भरता नहीं पाई जाती है ।

N.H. - 2 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति में परस्पर निर्भरता नहीं पाई जाती है ।

N.H. - 3 सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।

N.H. - 4 सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।

N.H. - 5 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।

N.H. - 6 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।

शोध परिसीमन परिसीमन तथा सीमाङ्कन का तात्पर्य है शोध सीमा का निर्धारण करना । परिसीमन द्वारा शोधकर्ता अध्ययन क्षेत्र तथा कार्यक्षेत्र विषयक सीमारेखा सुनिश्चित करता है । प्रस्तुत शोध का परिसीमन अधोलिखित है

1. प्रस्तुत शोध में केवल आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में शिक्षकों की आत्म सामर्थ्य तथा नियंत्रण संस्थिति के मध्य अध्ययन किया गया है । 2. प्रस्तुत अध्ययन मध्य व दक्षिण दिल्ली स्थित केवल सरकारी तथा गैर - सरकारी विद्यालयों को ही प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया ।

शोध के चरों की संक्रियात्मक परिभाषा प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चरों का वर्णन अधोलिखित है - **अनाश्रित चर** - आध्यात्मिक बुद्धि . **आश्रित चर** - आत्मसामर्थ्य एवं नियन्त्रण संस्थिति **परिनियामक चर** - सरकारी व गैरसरकारी विद्यालय

शोध विधि प्रस्तुत अध्ययन में शोध विषय की प्रकृति अनुसन्धान के प्रकार एवं क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार **कार्योत्तर** विधि का प्रयोग किया गया ।

प्रतिदर्श प्रस्तुत शोध अध्ययन में असम्भाव्यता प्रतिदर्श चयन विधि के अन्तर्गत सुविधा चयन शोध प्रतिदर्श विधि द्वारा दक्षिण मध्यदिल्ली स्थिति 15 सरकारी और 15 गैरसरकारी विद्यालयों को चयनित किया गया । इसमें सरकारी विद्यालय से 150 शिक्षक

(75 पुरुष व 75 महिला) और गैरसरकारी विद्यालयों से 150 शिक्षकों (75 पुरुष व 75 महिला) का सरल यादृच्छिक विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया ।

शोध उपकरण प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु आध्यात्मिक बुद्धि , आत्म सामर्थ्य एवं नियन्त्रण संस्थिति से सम्बन्धित तीन उपकरणों का प्रयोग किया गया । जिनका संक्षिप्त वर्णन अधोलिखित है

आध्यात्मिक बुद्धि के मापन हेतु प्रो . अमिता पाण्डेय भारद्वाज महोदया के द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया । जिसमें 5 आयाम है - समीक्षात्मक - अस्तित्ववादी चिन्तन , व्यक्तिगत अर्थोत्पादन , परस्पराभिज्ञता , चेतनावस्था का विस्तार , समन्वयात्मक दृष्टि क्षमता । प्रत्येक आयाम में 6 कथन हैं और सम्पूर्ण आयामों की संख्या 30 है , प्रत्येक में विकल्पों की संख्या 5-5 रखी गयी है - पूर्ण सहमत , सहमत , अनिश्चित , असहमत , पूर्ण असहमत । इस मापनी की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए परीक्षण पुनःपरीक्षण विधि ज्ञात किया गया जिसकी विश्वसनीयता 0.75 है तथा वैधता विषय विशेषज्ञ तथा विषय वस्तु के द्वारा किया गया । आत्म सामर्थ्य सम्बन्धित द्वितीय मापनी का निर्माण शोधार्थी द्वारा स्वतः किया गया । जिसमें आत्म सामर्थ्य से सम्बन्धित 80 कथन निर्मित किये गये जिसमें पदविश्लेषण माध्यम से शिक्षण कार्य से सम्बन्धित कुल 30 कथन चयनित किये गये जिसमें उच्च आत्म सामर्थ्य सम्बन्धित तथा निम्न आत्म सामर्थ्य सम्बन्धित 15-15 कथन रखे गये । इस मापनी की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए परीक्षण पुनःपरीक्षण विधि ज्ञात किया गया जिसकी विश्वसनीयता 0.73 है तथा वैधता विषय विशेषज्ञ तथा विषय वस्तु के द्वारा किया गया । नियन्त्रण संस्थिति सम्बन्धित तृतीय मापनी का निर्माण शोधार्थी द्वारा स्वतः किया गया । जिसमें नियन्त्रण संस्थिति से सम्बन्धित 80 कथन निर्मित किये गये जिसमें पदविश्लेषण माध्यम से शिक्षण कार्य से सम्बन्धित कुल 30 कथन चयनित किये गये जिसमें आन्तरिक नियन्त्रण संस्थिति सम्बन्धित तथा बाह्य नियन्त्रण संस्थिति से सम्बन्धित 15-15 कथन रखे गये । इस मापनी की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए परीक्षण पुनःपरीक्षण विधि ज्ञात किया गया जिसकी विश्वसनीयता 0.71 है तथा वैधता विषय विशेषज्ञ तथा विषय वस्तु के द्वारा किया गया ।

आधार सामग्री का विश्लेषण एवं निर्वचन प्रस्तुत शोध अध्ययन में आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में शिक्षकों की आत्म सामर्थ्य एवं नियन्त्रण संस्थिति का विश्लेषण 4 चरण में किया गया है । तथा अन्त में शून्य परिकल्पना का परीक्षण किया गया । जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है

शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि का विश्लेषण विभिन्न आयाम लिङ्ग तथा विद्यालय की संरचना के अनुसार किया गया । आध्यात्मिक बुद्धि के आयाम के सन्दर्भ में - इस विश्लेषण में आध्यात्मिक बुद्धि का 5 आयाम है जिनको 3 श्रेणियों में विभाजित किया गया - उच्च , मध्य , निम्न । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (i) में विस्तृत रूप से वर्णन है ।

तालिका (1) आध्यात्मिक बुद्धि के आयाम के आधारानुसार विभिन्न श्रेणियों में प्राप्त प्रतिशत

श्रेणी / आध्यात्मिक बुद्धि आयाम	आध्यात्मिक बुद्धि					
	निम्न		मध्यम		उच्च	
	f	f %	f	f %	f	f %
समीक्षात्मक– अस्तित्ववादी चिन्तन	80	26	110	36.66%	110	36.66%
व्यक्तिगत अर्थोत्पादन	80	26.66%	110	36.66%	110	36.66%

परस्पराभिज्ञता	87	29%	110	36.66%	103	34.33%
चेतनावस्था का विस्तार	81	27%	129	43%	90	30.00%
समन्वयात्मक दृष्टि क्षमता	61	20.33%	78	26%	161	53.66%
योग	129.65÷5=25.93%		178.98÷5=35.79%		191.31÷5=38.26%	

लिङ्ग के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि का विश्लेषण लिङ्ग के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के अध्ययन में बुद्धि को 3 श्रेणी में बाँटा गया यथा उच्च , मध्यम , निम्न । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (ii) में विस्तृत रूप से वर्णन है ।

तालिका (ii) लिङ्ग के अनुसार शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि का प्राप्त प्रतिशत

आध्यात्मिक बुद्धि / लिङ्ग	आध्यात्मिक बुद्धि					
	निम्न		मध्यम		उच्च	
	f	f%	f	f%	f	f%
पुरुष (शिक्षक)	31	20.6%	80	53.33%	39	26%
महिला (शिक्षिका)	47	31.33%	79	52.66%	24	16%

विद्यालय के संरचना के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि का विश्लेषण इस सन्दर्भ में आध्यात्मिक बुद्धि का विद्यालय संरचना के अनुसार सरकारी तथा गैरसरकारी शिक्षकों के अध्यात्मिक बुद्धि का 3 श्रेणियों में विभाजित किया गया है यथा उच्च , मध्यम , निम्न । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (iii) में विस्तृत रूप वर्णन है ।

तालिका (iii) विद्यालय संरचना के अनुसार शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि का प्राप्त प्रतिशत

श्रेणी / विद्यालय की प्रकार	**आध्यात्मिक बुद्धि**					
	निम्न		मध्यम		उच्च	
	f	f%	f	f%	f	f%
सरकारी	37	24.66%	72	48%	41	27.33%
गैरसरकारी	41	27.33%	85	56.66%	24	16%

शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में विभिन्न वर्गों के अनुसार आत्म सामर्थ्य विश्लेषण इस विश्लेषण आत्म सामर्थ्य के विभिन्न वर्ग , लिङ्ग तथा संस्था के संरचना के अनुसार किया गया । विभिन्न वर्ग के अनुसार आत्म सामर्थ्य का विश्लेषण के सन्दर्भ में आध्यात्मिक बुद्धि को 3 श्रेणियों में विभाजित कर आत्म सामर्थ्य को 2 उपवर्ग में विभाजित किया गया । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (iv) में विस्तृत रूप से वर्णन है ।

तालिका (iv) आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्म सामर्थ्य का विभिन्न वर्ग में प्राप्त प्रतिशत

श्रेणी आत्म सामर्थ्य का स्वरूप	निम्न	मध्यम	उच्च	योग
उच्चात्म सामर्थ्य	21.33% 37	43% 72	16% 41	80.33%
निम्नात्म सामर्थ्य	4.33% 41	11.33% 85	4% 24	19.66%

लिङ्ग के आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्म सामर्थ्य का विश्लेषण आध्यात्मिक बुद्धि को 3 श्रेणियों में विभाजित कर पुन : 2 उपश्रेणियों में विभाजित कर लिङ्ग के अनुसार विश्लेषण किया गया । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका विस्तृत रूप से वर्णन है ।

तालिका (v) लिङ्ग के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्म सामर्थ्य का विभिन्न वर्ग में प्राप्त प्रतिशत

आत्म सामर्थ्य के वर्ग लिङ्ग	आध्यात्मिक बुद्धि के विभिन्न श्रेणी					
	निम्न		मध्यम		उच्च	
	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न
पुरुष शिक्षक	28 18.66%	4 2.6%	67 44.66%	13 7.3%	**34** 22.6%	6 4%
महिला शिक्षिका	43 *28.6%*	**6** 4%	71 **47.33%**	**7** **4.6%**	23 15.33%	**0%** 0

विद्यालय संरचना के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्म सामर्थ्य का विश्लेषण में आध्यात्मिक बुद्धि को 3 श्रेणी तथा 2 उपश्रेणियों विभाजित कर सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयों संरचना के अनुसार विश्लेषण किया । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (vi) में विस्तृत रूप से वर्णन है ।

तालिका (vi) विद्यालय के संरचनानुसार आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्म सामर्थ्य का विभिन्न वर्ग में प्राप्त प्रतिशत

आत्म सामर्थ्य का वर्ग विद्यालय संरचना	आध्यात्मिक बुद्धि के विभिन्न श्रेणी					
	निम्न		मध्यम		उच्च	
	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न
स्रकारी	36 24%	1 0.66%	66 44.%	7 4.66%	**36** **24.%**	4 2.66%
गैरसरकारी	35 *23.33%*	**6** **4%**	**71** **47.33%**	**13** **8.66%**	*23* *15.33%*	**2** **1.33%**

शिक्षकों का आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में नियन्त्रित संस्थिति का विश्लेषण 3 चरणों में किया गया । आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में बाह्य तथा आन्तरिक नियन्त्रण संस्थिति का विश्लेषण इस विश्लेषण में आध्यात्मिक बुद्धि को 3 श्रेणियों में विभाजित कर नियन्त्रण संस्थिति को 2 श्रेणियों में विभाजित किया गया । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (vii) में विस्तृत रूप से वर्णन है ।

तालिका (vii) आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में बाह्य तथा आन्तरिक नियन्त्रण संस्थिति के विभिन्न श्रेणी में प्राप्त प्रतिशत

आध्यात्मिक बुद्धि के श्रेणी नियन्त्रणसंस्थितिः	निम्न		मध्यम		उच्च	
	f	f%	f	f%	f	f%
बाह्य	31	10.33%	66	22%	23	7.66%
आन्तरिक	48	16%	96	32%	36	12%

लिङ्ग के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में नियन्त्रण संस्थिति के विश्लेषण में आध्यात्मिक बुद्धि को 3 श्रेणियों में विभाजित कर पुनः नियन्त्रण संस्थिति को 2 उपश्रेणियों में विभाजित कर लिङ्ग के अनुसार विश्लेषण किया गया । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (viii) में विस्तृत रूप से वर्णन है ।

तालिका (viii) लिङ्ग के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में नियन्त्रण संस्थिति के विभिन्न श्रेणी का पाप्त पतिशत

नियन्त्राण संस्थिति के प्रकृति लिर्धै	आध्यात्मिक बुद्धि के श्रेणी					
	निम्न		मध्यम		उच्च	
	आन्तरिक	बाह्यिक	आन्तरिक	बाह्यिक	आन्तरिक	बाह्यिक
पुरुष	12 8%	18 12%	36 24%	45 30%	**25** **16.66%**	14 9.33%
महिला	26 *17.33%*	**23** **15.33%**	**37** **24.66%**	**41** **30%**	*17* *11.33%*	**6** **4%**

विद्यालय संरचना के आधार पर आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में नियन्त्रण संस्थिति का विश्लेषण

इस विश्लेषण में आध्यात्मिक बुद्धि को 3 श्रेणी तथा 2 उपश्रेणियों विभाजित कर सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयों संरचना के अनुसार विश्लेषण किया । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (ix) में विस्तृत रूप से वर्णन है

(ix) विद्यालय संरचना के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में नियंत्रण संस्थिति का प्राप्त प्रतिशत

नियन्त्राण संस्थिति प्रकृति विद्यालयीय प्रकार	आध्यात्मिक बुद्धि के श्रेणी					
	निम्न		मध्यम		उच्च	
	आन्तरिक	बह्यिक	आन्तरिक	बाह्यिक	आन्तरिक	बाह्यिक
स्रकारी	28 18.66%	13 8.66%	32 21.33%	37 24.66%	26 17.33%	14 9.33%
गैरसरकारी	15 *10%*	**16%** 24	**26%** 39	**32.66%** 49	*10.66%* 16	**4.66%** 7

आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्म सामर्थ्य तथा नियन्त्रण संस्थिति के सहचर्यात्मक विश्लेषण में आध्यात्मिक बुद्धि को 3 श्रेणी में विभाजित कर आत्म सामर्थ्य को 2 वर्गों में विभाजित करके नियन्त्रण संस्थिति को 2 उपश्रेणियों में विभाजित किया गया । जिनकी प्राप्त आवृत्तियों को प्रतिशतों में परिवर्तित किया गया । जिसका तालिका (x) में विस्तृत रूप से वर्णन है

तालिका (x) आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्म सामर्थ्य तथा नियंत्रण संस्थिति का प्राप्त प्रतिशत

आत्म सामर्थ्य का विभिन्न वर्ग नियंत्राण–संस्थिति	आध्यात्मिक बुद्धि के श्रेणी					
	निम्न		मध्यम		उच्च	
	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च
बह्य	4 1.33%	19 6.33%	14 4.66%	70 23.33%	4 1.33%	38 12.66%
आन्तरिक	3 *1%*	36 12%	10 3.33%	62 20.66%	5 1.66%	35 11.66%

शोध परिकल्पना परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन की शोध परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु 6 शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी । जिसका परीक्षण काईस्क्वायर (x2) मान ज्ञात करके निम्नलिखित रूप में किया गया ।

N.H. - 1 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य में परस्पर निर्भरता नहीं पाई जाती है । इस परिकल्पना का परीक्षण काईस्क्वायर (x2) द्वारा किया गया । तथा 2x3 तालिकामान द्वारा परस्पर तुलना भी किया गया । जिसका परिणाम तालिका (xi) में वर्णित है ।

तालिका (xi) शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि तथा आत्म सामर्थ्य के परस्पर निर्भरता परीक्षण

प्राप्तx^2मान	तालिकामान	df	प्रेक्षितान्तर	शून्यपरिकल्पना
X^2=0.58	0.05 = 5.991 0.01=13.815	(r-1)×(c-1) (2-1)×(3-1) 1×2=2	प्रेक्षितान्तर सार्थक नहीं होता है ।	0.05 तथा 0.01 दोनों स्तर पर स्वीकृत किया गया

N.H. - 2 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति में परस्पर निर्भरता नहीं पाई जाती है ।

इस परिकल्पना का परीक्षण काईस्क्वायर द्वारा(x2) किया गया । तथा 2x3 तालिकामान द्वारा परस्पर तुलना भी किया गया । जिसका परिणाम तालिका (xii) में वर्णित है ।

तालिका (xii) शिक्षकों आध्यात्मिक बुद्धि तथा नियन्त्रण संस्थिति के परस्पर निर्भरता परीक्षण

प्राप्तx^2मान	तालिकामान	df	प्रेक्षितान्तर	शून्यपरिकल्पना
X^2= 2.15	0.05 = 5.59 0.01=13.81	(r-1)×(c-1) (2-1)×(3-1) 1×2=2	प्रेक्षितान्तर सार्थक नहीं होता है।	0.05 तथा 0.01 दोनों स्तर पर स्वीकृत किया गया

N.H. - 3 सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।

इस परिकल्पना का परीक्षण काईस्कायर द्वारा (x2) किया गया । तथा 2x3x2 तालिकामान द्वारा परस्पर तुलना भी किया गया । जिसका परिणाम तालिका (xiii) में वर्णित है ।

तालिका (xiii) सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयीय शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्म सामर्थ्य परीक्षण

प्राप्तx^2मान	तालिकामान	df	प्रेक्षितान्तर	शून्यपरिकल्पना
X^2=13.894	0.05 = 11.070 0.01 = 20.517	(r-1)×(c-1) (2-1)×(6-1) 1×5=5	प्रेक्षितान्तर 0.05 स्तर पर सार्थक 0.01 स्तर पर असार्थक	0.05 स्तर पर अस्वीकृत 0.01 स्तर पर स्वीकृत

N.H. - 4 सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है । इस परिकल्पना का परीक्षण काईस्कायर द्वारा (x2) किया गया । तथा 2x3x2 तालिकामान द्वारा परस्पर तुलना भी किया गया । जिसका परिणाम तालिका (xiv) में वर्णित है ।

तालिका (xjv) लिङ्गानुसार शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि तथा आत्म सामर्थ्य परीक्षण

प्राप्तx^2मान	तालिकामान	df	प्रेक्षितान्तर	शून्यपरिकल्पना
X^2=31.58	0.05 = 11.07 0.01 = 15.08	(r-1)×(c-1) (2-1)×(6-1) 1×5=5	प्रेक्षितान्तर सार्थक होता है	उभय स्तर पर अस्वीकृत

N.H. - 5 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं आत्मसामर्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।

इस परिकल्पना का परीक्षण काईस्क्वायर द्वारा (x2) किया गया । तथा 2x3x2 तालिकामान द्वारा परस्पर तुलना भी किया गया । जिसका परिणाम तालिका (xv) में वर्णित है ।

तालिका (xv) सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयीय शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियन्त्रण संस्थिति परीक्षण

प्राप्तx^2मान	तालिकामान	df	प्रेक्षितान्तर	शून्यपरिकल्पना
X^2=14.22	0.05 = 11.07 0.01 = 15.08	(r-1)×(c-1) (2-1)×(6-1) 1×5=5	प्रेक्षितान्तर 0.05 स्तर पर सार्थक 0.01 स्तर पर असार्थक	0.05 स्तर पर अस्वीकृत 0.01 स्तर पर स्वीकृत

N.H. - 6 शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियंत्रण संस्थिति के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।

इस परिकल्पना का परीक्षण काईस्क्वायर (R) द्वारा किया गया । तथा 2x3x2 तालिकामान द्वारा परस्पर तुलना भी किया गया । जिसका परिणाम तालिका (xvi) में वर्णित है ।

तालिका (xvi) लिङ्गानुसार शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि एवं नियन्त्रण संस्थिति परीक्षण

प्राप्तx^2मान	तालिकामान	df	प्रेक्षितान्तर	शून्यपरिकल्पना
X^2=15.17	0.05 = 11.07 0.01 = 15.08	(r-1)×(c-1) (2-1)×(6-1) 1×5=5	प्रेक्षितान्तर सार्थक होता है	उभय स्तर पर शून्यपरिकल्पना अस्वीकृत तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत

सामान्यीकरणं एवं निष्कर्ष निरूपण

प्रस्तुत शोध कार्य के विश्लेषणात्मक एवं सामान्यीकृत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आध्यात्मिक बुद्धि के पाँचों आयामों में समन्वयात्मक दृष्टि क्षमता के आयामों में शिक्षक के आध्यात्मिक बुद्धि उच्च श्रेणी में सर्वाधिक पायी गयी । लिङ्ग के अनुसार महिला और पुरुष दोनों शिक्षकों के मध्यम श्रेणी में आध्यात्मिक बुद्धि की अधिकता प्राप्त हुई । विद्यालय संरचना के अध्ययन में सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय के शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धि मध्यम श्रेणी में अधिक पाई गई । आध्यात्मिक बुद्धि के मध्यम श्रेणी में उच्च आत्म सामर्थ्य की अधिकता पाई गई । अधिकांश शिक्षकों के आत्म सामर्थ्य उच्च सम्पन्न पाई गई । लिङ्ग के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के श्रेणी में पुरुष और महिला शिक्षिकाओं में सामान्य भिन्नता पाई गई । विद्यालय संरचना के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि में सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के आध्यात्मिक बुद्धि मध्य प्रकृति की पाई गई । आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में नियन्त्रण संस्थिति में भी आध्यात्मिक बुद्धि के मध्यम श्रेणी में आन्तरिक संस्थिति में अधिकता पाई गई । लिङ्ग के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के मध्यम श्रेणी में पुरुष एवं महिला शिक्षकों

के आन्तरिक नियन्त्रण संस्थिति में सामान्य पृथकता पाई गई । विद्यालय के संरचना के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के मध्यम श्रेणी में सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय शिक्षकों के आन्तरिक नियन्त्रण संस्थिति में सामान्य पार्थक्यता पाई गई । आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में मध्यम श्रेणी में आत्म सामर्थ्य एवं नियन्त्रण संस्थिति में सामान्य पार्थक्यता पाई गई ।

शैक्षिकनिहितार्थ सम्पूर्ण जगत में शिक्षक व्यवसाय सभी व्यवसायों से भिन्न है । इसका कारण है कि अध्यापक मनुष्यों का निर्माण करती है । शिक्षक का प्रमुख कार्य छात्रों की मानवीय प्रवृत्तियों का पोषण एवं विकास करना है । तथा शिक्षक का मुख्य उद्देश्य सभी मानवों की उपलब्धि से है । मानवों की निर्माण प्रक्रिया बहुत कठिन है । इसलिए अध्यापक व्यवसाय उच्च व्यवसाय है । सभी छात्र अध्यापकों की व्यवहार का अनुकरण करती है । इसलिए अध्यापक का उच्च स्तर का आचरण एवं व्यवहार होना आवश्यक है । ये संस्कार छात्रों में अच्छा संस्कार डालती है । अच्छा व्यवहार एवं आचरण ही उत्तम शिक्षक का आभूषण होता है । प्रस्तुत शोध कार्य में आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में आत्म सामर्थ्य नियन्त्रण संस्थिति के विश्लेषणात्मक अध्ययन में प्राप्त हुए अधिकतर शिक्षक की आध्यात्मिक बुद्धि मध्यम प्रकार की है शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि और बढ़नी चाहिए । जिससे उच्च आध्यात्मिक बुद्धि सम्पन्न अध्यापक बन सके । उच्च आध्यात्मिक बुद्धि सम्पन्न अध्यापक ही छात्रों को अच्छा गुणवान , धृतिमान , श्रुतिवान , कृतिमान , व्यवहार में कुशलसम्पन्न बना सके । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज नैतिकता पतन हो रहा इसलिए उच्च मूल्य के लिए छात्रों में संस्कारों की आवश्यकता है । शिक्षा का उद्देश्य गुणयुक्त उत्तम चरित्र और उत्तम संस्कारवान मानव का निर्माण करना है । प्रत्येक देश की श्रेष्ठता और विकास के लिए नागरिकों का विकास होना परम आवश्यक है । इसलिए प्रत्येक अध्यापकों को चाहिए कि वे अपने देश के विकास के लिए उत्तरदायित्व समझे । इसी सन्दर्भ में डॉ . एस . राधाकृष्णन् का मार्मिक कथन है - " संकुचित मन वाले व्यक्तियों से देश का विकास होना असम्भव है । विस्तृत मन वाले व्यक्तियों के द्वारा ही देश का विकास होना सम्भव है । " इस प्रकार के कार्यों के सम्पन्न करने के लिए स्वप्रत्यक्षीकृत आध्यात्मिक क्षमता होना आवश्यक है , वो है आत्मसामर्थ्य । आध्यात्मिक बुद्धि के साथ आत्म सामर्थ्य सम्बन्धित है । शोधकार्यों में शिक्षकों की आत्म सामर्थ्य का अधिकता प्रतीत होती है । जो छात्र , विद्यालय , समाज और देश के लिए बहुत उत्तम विषय है । जिससे शिक्षक छात्रों के व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान कर सके । तथा कक्षा का वातावरण और शिक्षकों की उच्च साहस भी प्रदान कर सके । आत्मसामर्थ्य से शिक्षकों में दृढ विश्वास और अभूतपूर्व चिन्तन करने में प्रेरणास्वरूप हो । उच्च आत्म सामर्थ्य वाले शिक्षक कक्षा की वातावरण में आने वाले सभी समस्याओं का बुद्धिमता के साथ निराकरण करके छात्रों के मार्ग में आने वाले विभिन्न समस्याओं का समाधान कर उनके विकास की प्रक्रिया को सुदृढ बना सके और उन्हें एक आदर्श नागरिक बनने में सहायता प्रदान करें । शिक्षक कक्षा में अपने पाठ के विषय को सम्यक् एवं उच्च आत्म सामर्थ्य के वैशिष्ट्य से सकारात्मक रूप से प्रतिदिन जो जो पाठ पढ़ाते हैं उनकी छोटी योजना अपने मन से बनाकर छात्रों को ज्ञानात्मक भावात्मक तथा क्रियात्मक सभी पक्षों से विकास कर सके । तथा पाठ का निहितार्थ प्रदान कर वास्तविक समाज के साथ उसको जोरकर छात्रों के व्यवहारों में ले आने का प्रयास कर सके । उच्च आत्म सामर्थ्य सम्पन्न शिक्षक उत्साह के साथ अपने ज्ञान का परिमार्जन करने में निरन्तर प्रयासशील रहे । तभी आध्यात्मिक बुद्धि के बढ़ने से शिक्षकों के आत्म सामर्थ्य भी स्वतः बढ़ती है । आध्यात्मिक बुद्धि से पूर्ण शिक्षकों की आन्तरिक नियन्त्रण संस्थिति अधिक होती है । जो समाज और देश के लिए उत्तम है । इसलिए शोधकार्य में प्राप्त हुआ कि जो शिक्षक केवल आध्यात्मिक बुद्धि से परिपूर्ण है उसकी उच्च आत्म सामर्थ्य तथा आन्तरिक नियन्त्रण संस्थिति अधिक हो सकता है

सन्दर्भग्रन्थसूची

- कपिल , श्रीमामराजदत्त (2002) अर्वाचीनं मनोविज्ञानम् , वाराणसी , सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय
- गुप्ता , एस . पी . एवं गुप्ता , अलका (2001) सांख्यिकी विधियाँ , . . इलाहाबाद , शारदा पुस्तक भवन गुप्ता , एस . पी . (2001) आधुनिक मापन एवं मूल्याङ्कन , इलाहाबाद , शारदा पुस्तक भवन
- तिलक , बालगंगाधर , सप्रे , माधवराव (अनु .) (2010) श्रीमद्भगवद्गीता : गीता रहस्य , शारदा प्रकाशन , नई दिल्ली
- पाठक , पी . डी . (2006) शिक्षा मनोविज्ञान , आगरा , विनोद पुस्तक मन्दिर
- पाठक , आर . पी . (2007) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान , नई दिल्ली , राधा प्रकाशन
- पाण्डेय , के . पी . (2006) शैक्षिक अनुसन्धान , वाराणसी , विश्वविद्यालय प्रकाशन . पाण्डेय , के . पी . (2007) नवीन शिक्षा मनोविज्ञान , वाराणसी , विश्वविद्यालय प्रकाशन
- पाण्डेय , के . पी . (2007) शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी , वाराणसी , विश्वविद्यालय प्रकाशन

- पाल , हंसराज (2006) प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान , दिल्ली , कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय
- मंगल , एस . के . (2011) शिक्षा मनोविज्ञान , लुधियाना , प्रकाश ब्रदर्स
- शर्मा , रामनाथ एवं शर्मा , रचना (2010) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान , . दिल्ली , अटलांटिक प्रकाशन
- शर्मा , आर . ए . (2009) शिक्षा अनुसन्धान के मूलतत्त्व एवं शोध प्रक्रिया , मेरठ , लायल बुक डिपो
- शङ्कराचार्य , विवेकचूडामणि , गीताप्रेस , गोरखपुर .
- श्रीवास्तव , रामजी (2003) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान , नई दिल्ली , मोतीलाल बनारसीदास
- शुक्ला , लक्ष्मी (2009) भारतीय मनोविज्ञान , दिल्ली , ईस्टर्न बुक लिंकर्स
- सिंह , अरुण कुमार (2004) मनोविज्ञान , समाजशास्त्र तथा शिक्षा , नई दिल्ली , मोतीलाल बनारसीदास
- सिंह , अरुण कुमार (2005) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान , नई दिल्ली , मोतीलाल बनारसीदास
- सिंह , अरुण कुमार (2012) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान , नई दिल्ली , मोतीलाल बनारसीदास
- सिंह , फतेह (2005) शिक्षामनोविज्ञानम् , जयपुर , आदित्य प्रकाशन
- सरीन एवं सरीन (1999) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान , नई दिल्ली , मोतीलालबनारसीदास
- Emmons A. R. (2000) Sprituality and Intelligence : Problems and Prospects . The International Journal for the Psychology of religion , 10 (1) , 7-65